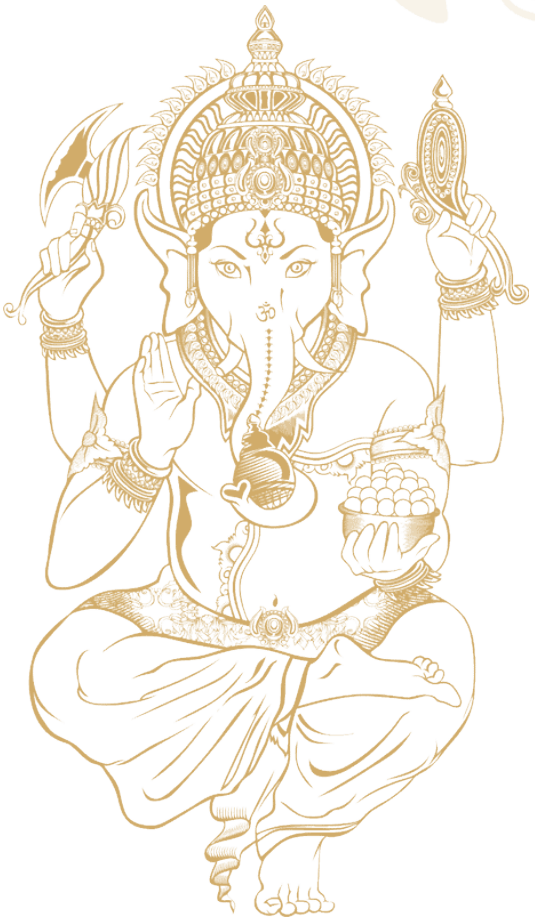

Mr.c

Ms.t

Model: Web-FreeMatching Order No: 119541203

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
16-17/07/1998	जन्म तिथि	3-04/03/2006
गुरू–शुक्रवार	दिवस	शुक्र–शनिवार
कला 04:46:00	जन्म समय	01:30:00 कला
घटी 57:00:09	जन्म समय(घटी)	46:39:05 घटी
India	देश	India
Sindkheda	स्थान	Erandol
21:17:00 उत्तर	अक्षांश	20:53:00 उत्तर
74:47:00 पूर्व	रेखांश	75:23:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
कला -00:30:52	स्थानिक संस्कार	-00:28:28 कला
कला 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 कला
05:57:56	सूर्योदय	06:47:45
19:15:33	सूर्यास्त	18:33:27
23:50:05	लाहिरी अयनांश	23:56:35

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
केतु 4वर्ष 5मा 20दि	13:30:33	मिथु	लग्न	वृषि	24:35:49	केतु 0वर्ष 9मा 30दि
रवि	00:22:18	कर्क	सूर्य	कुंभ	19:09:28	शुक्र
06/01/2023	04:48:40	मेष	चंद्र	मेष	11:44:46	02/01/2007
05/01/2029	13:17:34	मिथु	मंगळ	वृष	13:09:44	02/01/2027
रवि 25/04/2023	27:03:07	कर्क	बुध व	मीन	02:54:22	शुक्र 03/05/2010
चन्द्र 25/10/2023	04:13:23	मीन	गुरु	तुला	24:55:02	रवि 04/05/2011
मंगळ 01/03/2024	02:57:27	मिथु	शुक्र	मक	04:51:48	चन्द्र 01/01/2013
राहु 24/01/2025	09:01:56	मेष	शनि व	कर्क	11:22:41	मंगळ 04/03/2014
गुरु 12/11/2025	08:15:21	सिंह व	राहु	मीन	10:31:15	राहु 03/03/2017
शनि 25/10/2026	08:15:21	कुंभ व	केतु	कन्या	10:31:15	गुरु 02/11/2019
बुध 31/08/2027	17:36:35	मक व	हर्ष	कुंभ	16:54:45	शनि 02/01/2023
केतु 06/01/2028	07:07:24	मक व	नेप	मक	24:17:29	बुध 02/11/2025
शुक्र 05/01/2029	11:42:13	वृषि व	प्लूटो	धनु	02:37:51	केतु 02/01/2027

लग्न–चलित

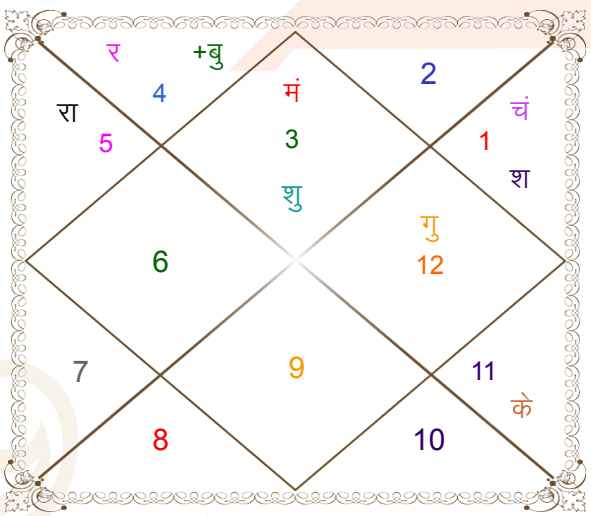

लग्न–चलित

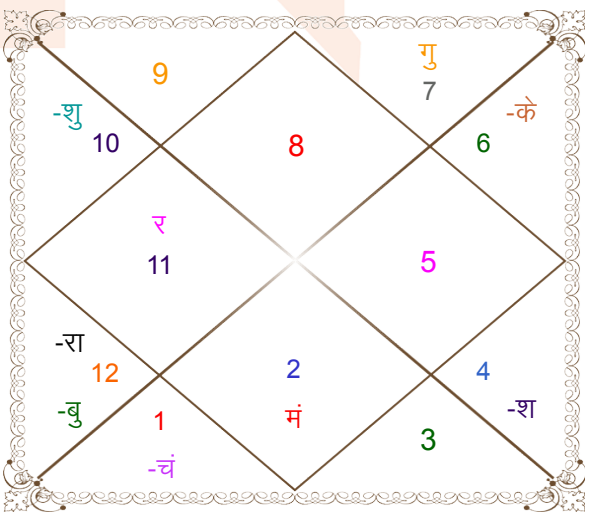

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	1	1.00	––	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	––	स्वभाव
तारा	जन्म	जन्म	3	3.00	––	भाग्य
योनि	अश्व	अश्व	4	4.00	––	यौन विचार
मैत्री	मंगळ	मंगळ	5	5.00	––	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	––	सामाजिकता
भकूट	मेष	मेष	7	7.00	––	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	आद्य	8	0.00	आह	स्वास्थ्य/संतान
एकुण :			**36**	**28.00**		

Mr.c का वर्ग सिंह है तथा Ms.t का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Mr.c और Ms.t का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Mr.c मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

Ms.t मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तं भाव में स्थित है।

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके स्थिते।
वृषे जाये घटे रन्ध्रे भौम दोषो न विद्यते।।

अर्थात् मेष राशि लग्न में, द्वादश में धनुराशि, चतुर्थ में वृश्चिक राशि, सप्तम में वृष राशि तथा अष्टम में कुम्भ राशि में मंगल स्थित हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल Ms.t कि कुण्डली में सप्तं भाव में वृषभ राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु Mr.c कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है। Mr.c तथा Ms.t में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।